ISSN 2348-4977 Visvabharati Patrika

विश्वभारती पत्रिका

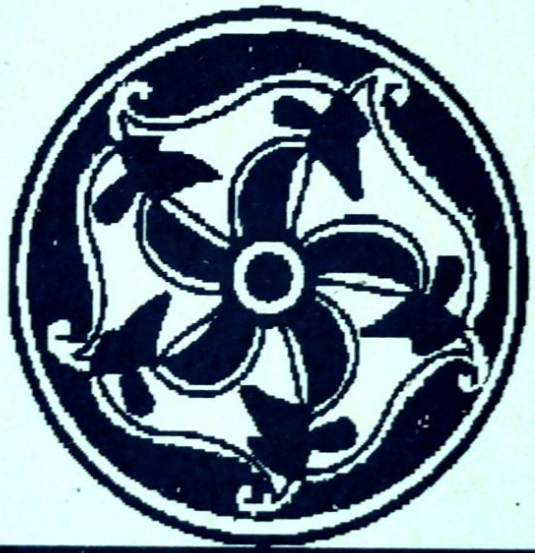

सम्पादक
मुक्तेश्वर नाथ तिवारी

खण्ड ७७
अंक २

आषाढ़ २०७७ - भाद्र २०७७
जुलाई २०२० - सितंबर २०२०

विश्वभारती पत्रिका

खण्ड ७७ अंक २ आषाढ़ २०७७ - भाद्र २०७७, जुलाई २०२० - सितम्बर २०२०

विषय-सूची

इस अंक के लेखक		५
स्वामी विवेकानंद : दलितोत्थान के प्रथम मसीहा	*कमल किशोर गोयनका*	९
तुलसी के सामाजिक समाधान	*कृष्णगोपाल मिश्र*	२३
सभ्यता विमर्श के संदर्भ में हिन्दी कहानी	*पी. रवि*	३३
अंधेरे में : चिंतन के आयाम	*कृष्ण कुमार सिंह*	४४
कुंभनदास के काव्य में मानवीय चेतना	*मृगेन्द्र राय*	५५
एक थकेहारे हिन्दुस्तानी की बातूनी आत्मा (सन्दर्भ : रमेशचन्द्र शाह और उनकी कहानियाँ)	*छबिल कुमार मेहेर*	६४
शोध-कार्य की प्रक्रिया का महत्त्व	*विजय कुमार भारती*	८७
नाट्यानुवाद का समाजशास्त्र	*बलीराम धापसे*	९४
त्रिनिडाड में व्याप्त भारतीयता	*दीपक पाण्डेय*	१००
हिन्दी-बँगला प्राचीन साहित्य : पारस्परिकता के कतिपय उदग्र प्रकरण	*दामोदर मिश्र*	११४
मानवीय संवेदना के कवि धूमिल	*किरण तिवारी*	१२७
सर्वव्यापी महामारी एवं बौद्धधर्म : एक समीक्षात्मक अध्ययन	*संजीव कुमार दास*	१३४

विषय-सूची

परसाई की व्यंग्य दृष्टि	*प्रतिभा प्रसाद*	१४३
माहेश्वर तिवारी के नवगीतों का समीक्षात्मक अध्ययन	*नितिन सेठी*	१५०
बादल सरकार : मानव जीवन की बेचैन रूपकथा के सिद्धान्तकार	*सुमेध रणवीर*	१५८
कुँवर नारायण का कवि-कर्म	*अभिषेक शर्मा*	१६६
शिवपूजन सहाय का रचनात्मक विवेक	*अनुशब्द*	१७६
सामाजिक प्रतिबद्धता का भोजपुरी उपन्यास	*शशि कुमार शर्मा*	१८२
अपनी बात	*मुक्तेश्वर नाथ तिवारी*	१८९

शिवपूजन सहाय का रचनात्मक विवेक

अनुशब्द

कृति एवं कृतिकार के सरोकार के आधार पर रचनाकारों की तीन श्रेणियाँ निर्मित होती हैं। पहली श्रेणी में रचनाकार ख्यात और महत होता है तथा उसकी रचनाएं सामान्य होती हैं। मसलन, पंत, महादेवी, जैनेन्द्र, अज्ञेय इत्यादि। इनकी रचनाएं रचनाकार के व्यक्तित्व से सम्मानित एवं पठनीय हुई हैं। दूसरी श्रेणी में रचनाकार लघुतम होता है और उसकी रचना या चरित्र महत्तम होते हैं। उदाहरण के लिए गीता, बाइबिल जैसी रचनाएं तथा शरलक होम, जेम्स बॉन्ड जैसे शक्तिशाली चरित्र पर्याप्त हैं। तीसरी श्रेणी बनती है वैसे रचनाकारों की जिनकी गरिमा के समानान्तर ही रचनाओं की भी महिमा होती है। जैसे- तुलसीदास और रामचरितमानस, प्रेमचंद और गोदान, प्रसाद और कामायनी, तोल्स्तोय और वार एण्ड पीस आदि। अर्थात महावीर प्रसाद द्विवेदी के 'उत्तर पुरुष'' एवं उनके एकलव्य आचार्य शिवपूजन सहाय इसी तीसरी श्रेणी के रचनाकार हैं 'देहाती दुनिया' जिसे कि हिन्दी के पहले आंचलिक उपन्यास होने का गौरव प्राप्त है, इनकी लोकप्रियता का आधार है। इसके अलावा 'मतवाला', 'बालक', 'हिमालय', 'माधुरी', 'साहित्य' आदि कई प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं के कुशल सम्पादन ने भी आचार्य शिवपूजन सहाय को हिन्दी साहित्य में सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित कर दिया। हिन्दी भाषा एवं साहित्य के उत्थान के लिए अपना धान पुआल करने वाले ऐसे साहित्य सेवियों का समूचे हिन्दी साहित्य ही नहीं बल्कि पूरे भारतीय साहित्य में सर्वथा अभाव है।

सहाय जी के जन्मशती वर्ष में 'साहित्य' के 'शतीपूर्ति श्रद्धांक' में प्रकाशित डॉ. मंगलपूर्ति के निबंध 'आचार्य शिवपूजन सहाय: व्यक्तित्व और कृति' का यदि जायजा लिया जाए तो वे उपसंहार में लिखते हैं : 'उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान हिन्दी गद्य के विकास में माना जाएगा। साहित्यिक पत्रों के क्षेत्र में भी उनकी सेवा अप्रतिम मानी जाएगी।'

इस उद्धरण की भंगिमा संकेत करती है कि शिवजी की उपलब्धियां आज ऐतिहासिक संदर्भ बन चुकी हैं। सहज ही पृच्छा जन्म लेती है कि क्या सचमुच आचार्य शिव जी व्यतीत हो गए? आज उनकी कोई सत्ता या महत्ता नहीं है? क्या वाकई वे इतिहास के परिवेश मात्र हैं? संग्रहालय के पात्र हैं? अब उनका कोई भी संदर्भ जीवित नहीं है? ये सारे प्रश्न पृच्छा की तीव्रता को जाहिर करते हैं। इनके उत्तर के लिए आचार्य शिवजी की रचनात्मक संदृष्टि (विजन) की पुनर्समीक्षा करनी होगी। नये सिरे से तत्कालीन समय, समाज और साहित्य के प्रति उनके